

**दुआ-66****दुआए रोजे पंज शंबा - जुमेरात****बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम**

सब तारीफ़ उस अल्लाह के लिये हैं जिसने अपनी कुदरत से अन्धेरी रात को रूखसत किया और अपनी रहमत से रौशन दिन निकाला और उसकी रौशनी का ज़रतार जामा मुझे पहनाया और उसकी नेमत से बहरामन्द किया। बारे इलाहा! जिस तरह तूने इस दिन के लिये मुझे बाकी रखा इसी तरह इस जैसे दूसरे दिनों के लिये जिन्दा रख और अपने पैगम्बर मोहम्मद (स0) और उनकी आल (अ0) पर रहमत नाज़िल फ़रमा और इस दिन में और इसके अलावा और रातों और दिनों में हराम उमूर के बजा लाने और गुनाह व मआसी के इरतेकाब करने से रन्जीदा खातिर न कर और मुझे इस दिन की भलाई और जो इसके बाद है उसकी भलाई अता कर और इस दिन की बुराई और जो कुछ इस दिन में है उसकी बुराई और जो इसके बाद है उसकी बुराई मुझसे दूर कर दे। ऐ अल्लाह! मैं सलाम के अहद व पैमान के ज़रिये तुझसे तवस्सुल चाहता हूँ और कुरान की इज़्जत व हुमत के वास्ते तुझ पर भरोसा करता हूँ और मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैह व आलेही वसल्लम के वसीले के तेरी बारगाह में शिफ़ाअत का तलबगार हूँ।

तो ऐ मेरे माबूद! मेरे इस अहद व पैमान पर नज़र कर जिसके वसीले से हाजत बर आरी का उम्मीदवार हूँ। ऐ रहम करने वालों में सबसे ज़्यादा रहम करने वाले। बारे इलाहा! इस रोज़े पन्जशम्बा में मेरी पांच हाजतें बर ला जिनकी समाई तेरे ही दामने करम में है और तेरी ही नेमतों की फ़रावानी उनकी मुतहम्मिल हो सकती है। ऐसी सलामती दे जिससे तेरी फ़रमानबरदारी की क़वत हासिल कर सकूँ। ऐसी तौफ़ीके इबादत दे जिससे तेरे सवाबे अज़ीम का मुस्तहेक़ करार पाऊँ। और सरे दस्त रिज़्के हलाल की फ़रावानी और खौफ़ व खतरे के मवाके पर अपने अमन के ज़रिये मुतमइन कर दे और ग़मों और फ़िक्रों के हुजूम से अपनी पनाह में रख। मोहम्मद (स0) और उनकी आल (अ0) पर रहमत नाज़िल फ़रमा और उनसे मेरे तवस्सुल को क़यामत के दिन सिफ़ारिश करने वाला, नफ़ा बख़्शने वाला करार दे। बेशक तू रहम करने वालों में सबसे ज़्यादा रहम करने वाला है।